

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No.

४५०२

Title

त्रिपुर सुन्दरी कवचं
त्रैलोक्य मोहन

Author

४

Extent

५

Age

४

Subject

तन्त्रम्

त्रिपुरसुन्दरीकवचम् त्रैलोक्यमोहनम्

४५०२

५५०२

५५०२
५५०२

त्रैलोक्यनिरूपणं तन्त्रसंग्रहः
प्रभाशंकरस्य

नं० ४५०२

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीमन्निपुरसुंदर्यै
 नमः ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ श्रीमन्निपुरसुंदर्यामा नमः ॥ दुर्गमाः ॥ कृपया कथि
 ताः सर्वाः श्रुताश्चाधिगतामया ॥ १ ॥ प्राणनाथा धुना अहिकवचं संवदिप्रहं ॥
 त्रैलोक्यमोहनं देवि नामतः कथितं पुरा ॥ २ ॥ इदानीं तु विदुः मिसवा लोक
 वचं सुतं ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सुंदरि प्राणवधुने ॥ ३ ॥ त्रैलोक्य
 मोहनं नाम सर्वविद्योद्यविग्रहं ॥ यच्छास्त्रादा नवान्विस्तुर्निजघानमुकुमुदः ॥
 ॥ ४ ॥ स्थितं तनुते ब्रह्माय हृत्वा पदं वासतः ॥ संहर्ता हं यतो देवि देवेशो वासवो
 यतः ॥ ५ ॥ धनाधिपः कुबेरोऽपि यतः सर्वदिग्गजैश्चराः ॥ नदियं परशिष्येभ्यो दे
 वैः सल्लिष्याय च ॥ ६ ॥ अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्ताय च ॥ ७ ॥ श्रीमन्निपु
 रसुंदर्याः कवचस्य रूपिः शिदः ॥ ८ ॥ श्रीमन्निपु
 रसुंदर्याः कवचस्य रूपिः शिदः ॥ ९ ॥ श्रीमन्निपु

॥ १॥ अगादिषोडशी रत्ना ता हृदये परि रक्ष ॥ १॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः ऐं क्लीं सौः ऐं क्लीं
 सौः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः ॥ १॥ अगादिषोडशी रत्ना ता हृदये परि रक्ष ॥ १॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः ऐं क्लीं सौः ऐं क्लीं
 सौः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः ॥ २॥ सकल ह्रीं नमः सर्वान् कर्मणाम् सदा सिता ॥ ह्रीं ह
 सौः सौं ह्रीं सौं ह्रीं सौं ह्रीं हसक हल ह्रीं ह्रीं ह्रीं सौः ॥ ३॥ ऐं ह्रीं सौं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं सौं ह्रीं सौं ह्रीं मे ॥ एकत्रिंशद्दूर्गारूपा मता पुनश्च द्वादश ॥ ४॥ अष्टास्वस्त्य
 वाच केवला नंदविन्मयी ॥ कटिदेशं सदा चतुःपरं चतुःस्वरूपिणी ॥ ५॥ हसक
 ल ह्रीं पातु मे पृष्ठं हसक हल ह्रीं ॥ कर्णौ चतुःकाय राजः सकल ह्रीं सदा चतुः ॥ ६॥
 वक्षःस्थलं शक्ति कूटं सर्वसंपत्पदायकं ॥ हसकल ह्रीं हसक हल ह्रीं सकल ह्रीं
 मे ॥ ७॥ लोपामुद्रा पंचदशी मध्यदेशं सदा चतुः ॥ कर्णौ चतुःकाय राजः सकल ह्रीं सदा चतुः
 र्द्वैल ह्रीं ॥ ८॥ कर्णौ चतुःकाय राजः सकल ह्रीं सदा चतुः ॥ ९॥ कर्णौ चतुःकाय राजः सकल ह्रीं सदा चतुः
 र्द्वैल ह्रीं सकल ह्रीं ॥ १०॥ कर्णौ चतुःकाय राजः सकल ह्रीं सदा चतुः ॥ ११॥ कर्णौ चतुःकाय राजः सकल ह्रीं सदा चतुः

॥ १ ॥

करइल डी रूप कं॥ ह सकल डी ललाट पतु कं॥ १॥ वसं क डल डी
 नो व पातु कामेश मध्य मं॥ कह्ये डी अलि नो कं कामः॥ २॥ ललाट
 स डी रा तया रव्य पातु जि कं व पंच मं॥ करइल डी ह सकल डी ह क डल डी क ह
 यल डी ह कल स डी परमात्म रूपिणी॥ वदं सकल पातु पंच कूटै स्त पंच मी॥ ३॥
 करइल डी घ्राणं तु पातु नाग भव संज्ञकं॥ ह सकल डी कंठं पातु कामेश संज्ञकं
 ॥ ४॥ सकल डी शक्ति कूटं रं धो पातु सदा मम॥ करइल डी ह सकल डी व॥
 ॥ ५॥ कामे नो पासिता विद्या कक्ष देशं सदा व ॥ ॥ ६॥ ओं डी ओं ऐं सौः ॐ डी ओं ऐं
 डी सौः ओं डी ओं ऐं डी॥ ७॥ कामादि षोडशी पातु मुक्तो त्रिपुर सुंदरी॥ ॐ डी
 डी ओं ऐं डी सौः ओं डी ओं ऐं ओं ओं ओं डी॥ ८॥ कामादि षोडशी पातु मलि वं
 ध हयं तथा॥ ओं डी ओं ऐं सौः ॐ डी ओं ऐं डी सौः सौः ऐं डी ओं ओं॥ ९॥ कामादि
 षोडशी पातु कौ त्रिपुर सुंदरी॥ १०॥ ह सौः ॐ ऐं डी ओं ऐं डी सौः ओं ओं ऐं डी हं ओं

लङ्की सकलङ्की तु ॥ ३८ ॥ नं द्या रा धि ता विद्ये यं सर्वांग मे सदा वतु वाय न्ये सह कलङ्की
उत्तर ॥ ३९ ॥ सकलङ्की ईशाने सुंदरी पातु मां सदा ॥ ह सकलङ्की सकलङ्की सकलङ्की मां ह
॥ ४० ॥ ऊर्ध्व रक्षतु सा नित्यं सूर्य पूज्या महोदया ॥ कएईलङ्की ह सकलङ्की सकलङ्की सकल
कङ्की च ॥ ४१ ॥ सर्वांगं शक्र संपूज्या सततं परिरक्षतु ॥ कएईलङ्की ह सकलङ्की ह
सकलङ्की च ॥ ४२ ॥ ब्रह्माणी मां सदा पायात्तु मां मणिपुर सुंदरी ॥ ह सकलङ्की ह
सकलङ्की ह ॥ ४३ ॥ सकल ह सकल ह सकलङ्की च मां कवी चतुः कूटा महाविद्या
पाताले मां सदा वतु ॥ ४४ ॥ ह सकलङ्की साधारं ह सकलङ्की शिव ॥ सकलङ्की
पातु नाभिं सह कलङ्की अनाहतं ॥ ४५ ॥ सह सकलङ्की कंठं सह सकलङ्की तथा
मनो भुवं सदा पातुरस संख्यं महा प्रभं ॥ ४६ ॥ ह सकलङ्की ह सकलङ्की सकल
ङ्की सह सकलङ्की सह सकलङ्की सह सकलङ्की ॥ ४७ ॥ सुदृढ वैष्णवी सा वैष्णवी
मां सुंदरी परा ॥ कएईल हरी ह मां सुंदरी ॥ ४८ ॥ सुंदरी ह मां सुंदरी ॥

तस्य न हा विद्या सत्रादौ कथिता त्रिमे ॥ ता सांख्य सात्त्विक रस या या विद्याः सु गो
 पिताः ॥ ५१ ॥ ब्रह्म ना कि म हो ते व श्री म हा वो उ दी द रा ॥ प्र का शी ता म या दे वी या
 पृ छ सि पु नः पु नः ॥ न हा वि द्या म यं ब्र ह्म क व रं म नु स्स्वो द्र तं ॥ गु र म भ्य र्च वि
 धि व त्क व रं द्र प ठे त तः ॥ त्रि स रु द्वा य था का ये सो पि पु र ण व रं व रः ॥ दे शी कः
 स र्व वि द्या स प्य धि का री ज पा दि षु ॥ ६२ ॥ दे व म भ्य र्च वि धि व त्पु र ण्यो स मा
 व रे त् ॥ अ षो त्तर श तं ज ष्ठा द्वा यं द्वा यं द्वा यं द्वा यं ॥ त त स्तु ति द्र व व सः पु र ण्य
 आ म द नो प मः ॥ मं त्र सि धि र्भ वे त्त स्य पु र ण्य वि ने द नु ॥ ग य प य न यी क ण
 त स्य व क्रा त्प जा य ते ॥ व क्रे त स्य व से द्वा णी त न ता जि अ ला ग रे ॥ ६५ ॥ उ ष्यां
 ज त्स्या द्द कं द त्वा मू ले नै व द ठे त् स द्वा य ॥ अ पि व री स रु द्वा यं पु र ण्य फ ल म वा
 मू जा त् ॥ ६६ ॥ कु र्ते स मा दि के भ्यो पि नु क्तः ॥ ६७ ॥ अ त्मा न
 ॥ ६८ ॥

तिस्र्यभूर्जमुटिकास्वर्गस्यधारयेदादि॥ ६०॥ तत्रैव
 गत॥ त्रिलोकं क्षोभयत्येवत्रैलोक्ये विजयी भवतु॥ ६१॥ तत्रैव प्राप्य शस्त्रा
 लिब्रत्नास्त्रादीनि पार्वति॥ माल्यानि कुसुमानि वसुखदा निभवंति हि॥ ७०॥
 स्पृष्ट्वा निरस्य नवनेलक्ष्मीवाणी वसेत्ततः॥ इदं कवचमशास्त्राद्यैस्तपे सुंद
 रींपरां॥ नवलक्षं प्रजप्त्वा पितृस्य विद्या न सिध्यति॥ शस्त्रघातमवाप्नोति
 स्त्रो विरान्मृत्यमाप्नुयात्॥ इदमेव परं यस्माद्भक्तिमुक्तिमहायकं॥ तस्मात्सर्व
 प्रयत्नेन पठनीयं मुमुक्षुभिः॥ ७३॥ भूवे रम्यं गत्रिवृत्तिं चोत्तमानां गरा क्रदियु
 मवस्वनलकोणगविंदुमध्ये सिंहासनोपरि गतारकपीठमध्ये प्रोक्तुं पम
 नयनां त्रिपुरां भजेहं॥ ७४॥ इति श्रीरुद्रयामले गौरीशंकरसंवादे गजराजेश्व
 रीश्रीमहात्रिपुरसुंदरीशोक्तोक्त्यमोक्तं नानाकवचं संपूर्णं॥ शुभं भवतु॥ ७५॥

महोपाध्याय महाराज-संज्ञ
संज्ञा मन्त्र